सौन्दर्य : अर्थ और स्वरूप

डॉ0 कामना कौशिक
विभागाध्यक्ष (हिन्दी) सी एम के नेशनल पी जी गर्ल्स कॉलेज सिरसा (हरियाणा)
Email - kamnacmk78@gmail.com

प्रस्तावनाः मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। सामाजिक प्राणी होने के कारण वह स्वभावतयः सौन्दर्य प्रेमी है। यह सौन्दर्य वृत्ति ही है जो उसे प्रत्येक काम को अच्छा करने के लिए प्रेरित करती है। सौन्दर्य की महत्ता को चित्रित करने के लिए मैं अपने लेख में भारतीय तथा पाश्चात्य विद्धानों की भिन्न–2 परिभाषाओं को प्रस्तुत कर रही हूँ।

सौन्दर्य जीवन का प्राण–तत्व है। समस्त जगत के जीवधारी सौन्दर्य के उपासक है। सौन्दर्य से उन्हे आन्नद प्राप्त होता है। आन्नद यदि सौन्दर्यानुभूति का फल है तो सौन्दर्य के लक्ष्ण आनन्दानुभूति के कारण होते है। इस प्रकार सौन्दर्य शास्त्र वह है जो सौन्दर्यानुभूति के परिणामों और कारणों की विश्लेषणात्मक व्याख्ता प्रस्तुत करता है। सौन्दर्य शास्त्र भारतीय नही है इसका आविर्भाव सर्वप्रथम ग्रीक में हुआ था। पाश्चात्य साहित्य में इसे ऐस्थेटिक्स नाम से जाना जाता है। सौन्दर्य शास्त्र ऐन्द्रिय संवेदना या ऐन्द्रिय सुख की चेतना का विज्ञान है जिसका लक्ष्य है–सौन्दर्य

संस्कृत कोष के अनुसार ''सुन्द+अरः से सुन्दर शब्द की व्युत्पत्ति हुई है जिसका अभिप्राय है– प्रिय, मनोज, मनोहर, आकर्षक, यथार्थ आदि।'' (1)

व्याकरण की दृष्टि से ''सौन्दर्य' संस्कृत के 'सुन्दर' शब्द से निर्मित है। 'सुन्दरस्य भावः इति सौन्दर्यम् भावे स्वञ प्रत्यय लगाकर ''सौन्दर्य'' भाववाचक संज्ञा हुई।'' (2)

डॉ0 नगेन्द्र अनुसार ''सौन्दर्य'' अंग्रेजी शब्द 'ब्यूटी' का प्रर्याय है। बो+टी (Beau+ty) से ब्यूटी शब्द निष्पन्न हुआ है। 'वो' का अर्थ है–प्रिय अर्थात् रसिक या श्रृंगारी पुरूष और 'टी' भाववाचक प्रत्यय है। इस प्रकार का 'ब्यूटी' का शब्दार्थ हुआ– रसिक भाव अथवा रसिकता।'' (3)

भारतीय और पाश्चात्य दोनों दृष्टियों में भारतीय मनीषियों तथा पाश्चात्य विचारकों ने 'सौन्दर्य' को अपने–अपने मतानुसार विभिन्न प्रकार की परिभाषाओं से प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। सर्वप्रथम हम भारतीय मनीषियों की परिभाषाओं का अध्ययन करते है :–

महादेवी वर्मा अनुसार– '' सामान्यतः सौन्दर्य ऐसी सुखद अनुभूति है जो वस्तुओं,रेखाओं आदि की विशेष सामजंस्यपूर्ण स्थिति में अनायास उत्पन्न हो जाती है।'' (4)

आचार्य शुक्ल के अनुसार '' सौन्दर्य बाहर की कोई वस्तु नही है, मन के भीतर की वस्तु है..... जैसे वीर कर्म से पृथक वीरत्व कोई पदार्थ नही है,वैसे ही सुन्दर वस्तु से पृथक् सोन्दर्य कोई वस्तु नही।'' (5)

नन्ददास अनुसार –

''ललना तन लावन्य लुनाई, मुक्ताफल जस–जस पानिय झॉई।
बिनभूषण भूषित अंग जोई, रूप अनूप कहावै सोई।
निरखत जाहि तृपति नहि आवै, तन में सो माधूरी कहावै।
देखत अनदेखी सी जोई,रमनीयता कहावै सोई।
सब अंग सुनिल सुढौनी सुहाई, सो कहिए जन सुन्दरताई।।'' (6)

धनान्द अनुसार–

''रावते रूप की रीति अनूप, नयो–नयो लागत न्यो–ज्यो निहारिये।
त्यों इन ऑखिन बानि अनोखी, अधानि कहूँ नहिं आनि निहारे।।''(7)

डॉ0 फतेह सिंह अनुसार– ''बाह्य जगत के रूपादि हमारी ज्ञानेन्द्रियों के द्वारा हमारे स्थूल में से किसी 'क्रिया' को जन्म देते है जिसके फलस्वरूप हमारे सूक्ष्म मन में कोई प्रिय भावना उद्बुद्ध होकर किसी आह्लाद जनक ज्ञान की घोषणा करती है तथा कामना और क्रिया को साथ लेकर अनेक प्रकार के अनुभवों में व्यक्त होती है। यह आह्लाद जनक ज्ञान जिस रूपादि के सन्दर्भ में गोचर होता है उसी को हम सुन्दर कहते है।'' (8)

कवि बिहारी लाल अनुसार–

''समै समै सुन्दर सवै, रूपकुरूप न कोय।
मन की रूचि जेती रूचै, तित तेती रूचि होय।'' (9)

अभिनव गुप्त के मतानुसार–

''सुन्दर वस्तु दर्शन से सहदय सामाजिक में भुक्ति नही, अभिव्यति की भी सिद्धि होती है। अतएव, रसानुभूति को वे आत्मपरक मानते है। कुछ समालोचक इन पर शैबदर्शन का प्रभाव मानते है और उनका विचार है कि इनकी सौन्दर्य दृष्टि आनन्द प्रधान है और आध्यात्मिक भी।'' (10)

पाश्चात्य विद्धानों ने भी ''सौन्दर्य'' शब्द को अपने अपने ढंग से भिन्न–भिन्न प्रकार से परिभाषित किया।

टालस्टाय अनुसार –''सौन्दर्य.....और कुछ नहीं,केवल वह है जो हमें प्रसन्न करता है। सौन्दर्य की धारणा केरल शिव से मेल नहीं खाती, वरन् उसकी विरोधी है, क्योकि शिव अधिकार वासनाओं पर विजय है,जबकि सौन्दर्य हमारी वासनाओ का मूल है।'' (11)

अरस्तु अनुसार ''सौन्दर्य–निर्माण सम्बन्धी सभी अंगों में समन्वय अथवा सांमजस्य अनिवार्य है इस समन्वय के अभाव में विविध अंग अव्यवस्थित होकर परस्पर विरोधी लगते है। जब तक ये सभी अंग पूरक –पोषक नहीं होते, तब तक हमारा मन उस ओर आकर्षित नही होता।'' (12)

कीटस के मतानुसार ''सौन्दर्य ही सत्य है और सत्य ही सौन्दर्य है।'' (13)

हरवर्ट रीड के मतानुसार ''सौन्दर्य हमारी ऐन्द्रिय धारनाओं में सामान्य
सम्बन्धों मे एकता है।'' (14)

उपसंहार

विभिन्न परिभाषाओं के आधार पर हम कह सकते कि सौन्दर्य में आन्नद प्रदान की विशिष्टता है। सौन्दर्य मूलतः आकषर्ण– प्रधान होता है। यह

रागाधिकता वृत्ति से अनुप्राणित होने के कारण राग–रंजन के रंग में और भी सुन्दर लगता है। बाह्य सौन्दर्य के प्रति प्रेम होता है और आन्तरिक सौन्दर्य के प्रति अनुरागो प्रेम और अनुराग सौन्दर्य रूपी देह दृष्टि की आत्मा है। सौन्दर्य सम्बन्धी आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के शब्दों को पढ़ने के बाद कुछ कहना शेष नही रह जायेगा। शुक्ल ने कहा है '' जिस सौन्दर्य की भावना मे मग्न होकर मनुष्य अपनी पृथक सत्ता की प्रतीति का विसज्रन करता है, वह एक दिव्य विभूति है। भक्त लोग अपनी उपासना या ध्यान में इसी विभूति का अवलम्बन करते है। तुलसी और सुर ऐसे सगुणोपासक भक्त राम और कृष्ण की सौन्दर्य–भावना में मग्न होकर ऐसी मंगल दशा का अनुभव कर गये है, जिनके सामने कैवल्य या मुक्ति की कामना का कहीं पता नही चलता।

निष्कर्षतयः

भिन्न–भिन्न परिभाषाओं के आधार पर हम कह सकते हैं कि सौन्दर्य का संबंध श्रृंगार के साथ भी है तथा साथ ही में यह भी स्पष्ट होता है कि सौन्दर्य का आह्लादपूर्ण होना अति अनिवार्य है।

सन्दर्भ सूची

(1) आप्टे, संस्कृत हिन्दी कोष, पृ0 115 (प्रथम वि0 सं0)
(2) वर्णदृढा दिभ्यःयञचभ्यः! सिद्धांन्त कौमुदी, अष्टाध्यायी, 5–1–123 (1287)
(3) डॉ नगेन्द्र, भारतीय सौन्दर्य शास्त्र की भूमिका पृ0 20
(4) संकल्पिता पृ0 52
(5) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, चिन्तामणि,भाग–1 पृ0 274 (1940 ई0)
(6) नन्ददास ग्रन्थांवली, पृ0 100, ब्रज रत्नदास।
(7) धनानन्द कवित्र, पद–15, विश्वनाथ प्रसाद मिश्र
(8) डॉ0 फतेह सिंह,भारतीय सौन्दर्य शास्त्र की भूमिका पृ0 126
(9) बिहारी रत्नाकर,दोहा 432
(10) कांति चन्द्रा पाण्डे 'तुल्नात्मक' ऐस्थेटिक्स पृ0 100
(11) टालस्टाय ' कला क्या है, पृ0 97
(12) अरस्तु 'कला की कविता' पृ0 21
(13) Ode on A Grecian Urn Keats.
(14) हरवर्ट रीड' द मीनिगं ऑफ आर्ट। पृ0 19